

---

# Vaidarbhiprokta Darshanoparanta Shiva Stuti

---

## वैदर्भीप्रोक्ता दर्शनोपरान्त शिवस्तुतिः

---

### Document Information

---

Text title : Vaidarbhiprokta Darshanoparanta Shiva Stuti

File name : vaidarbhIproktAdarshanoparAntashivastutiH.itx

Category : shiva, shivarahasya, stuti

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | ugrAkhyah saptamAMshaH | adhyAyaH 25| 369-377||

Latest update : June 16, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 20, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

वैदर्भीप्रोक्ता दर्शनोपरान्त शिवस्तुतिः



(शिवरहस्यान्तर्गते उग्राख्ये)

वैदर्भी उवाच

कृतार्थोऽस्मि महादेव दर्शनादधुना तत्र ।

दर्शनात्तव गौरीश जन्म धन्यमभून्मम ॥ ३६९ ॥

यदिदं पादकमलं भोगमोक्षप्रदायकम् ।

दिष्ट्या दृष्टं मया शम्भो विष्णुनेत्राम्बुजार्चितम् ॥ ३७० ॥

हिरण्यबाहुदृष्टं ते रूपं दृष्टं हिरण्यमयम् ।

हिरण्यवर्णो दृष्टोऽद्य तव मङ्गलविग्रहः ॥ ३७१ ॥

त्वं हिरण्यपतिर्दृष्टस्त्वं दृष्टोह्यम्बिकापतिः ।

दृष्टोऽस्युमापतिः साक्षादृष्टः पशुपतिर्मया ॥ ३७२ ॥

ऋतं सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम् ।

ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं दृष्ट्वा त्वां मुदिताऽस्म्यहम् ॥ ३७३ ॥

प्रत्यक्षोऽसि यतस्त्र्यक्ष ततोऽहं मुदिता प्रभो ।

महेश त्वत्प्रसादेन भुक्तमैश्वर्यमुत्कटम् ॥ ३७४ ॥

मया नज्ञातमाजन्म शारीरं दुःखमण्वपि ।

सुखेनैव स्थितं शम्भो सर्वदा त्वत्प्रसादतः ॥ ३७५ ॥

कोटिशो रत्नदानानि स्वर्णदानान्यपि प्रिये ।

कृतानि त्वत्प्रसादेन पार्वतीवल्लभान्वहम् ॥ ३७६ ॥

उमेश भुक्तभोगायै भोगेच्छा नैव मे प्रभो ।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं देहि मुक्तिमतः परम् ॥ ३७७ ॥


॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते वैदर्भीप्रोक्ता दर्शनोपरान्त शिवस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । उग्राख्यः सप्तमांशः । अध्यायः २५ । ३६९-३७७ ॥


- .. shrIshivarahasyam . ugrAkhyaH saptamAMshaH . adhyAyaH 25 . 369-377..

Proofread by Ruma Dewan

---

——  
*Vaidarbhiprokta Darshanoparanta Shiva Stuti*

pdf was typeset on June 20, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

